

डॉ. गैरी येट्स, यिर्मयाह, व्याख्यान 18, यिर्मयाह 23, झूठे भविष्यद्वक्ता

© 2024 गैरी येट्स और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. गैरी येट्स यिर्मयाह की पुस्तक पर अपने निर्देश दे रहे हैं। यह यिर्मयाह 23, झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर सत्र 18 है।

हम उनके विरुद्ध निर्वासन का निर्णय लाने जा रहे हैं।

जब परमेश्वर ने यिर्मयाह को, 605 ई.पू. में, यिर्मयाह अध्याय 36 में, 20 से ज़्यादा सालों तक सेवा करने के बाद, यह आज्ञा दी कि वह न्याय की भविष्यवाणियों की एक पुस्तक लिखे जिसका प्रचार वह यहूदा के लोगों के खिलाफ़ कर रहा था और अपने लेखक, बारूक से उसे मंदिर में पढ़वाए, तो वह पुस्तक शायद यिर्मयाह 25 में दी गई पुस्तक से बहुत मिलती-जुलती रही होगी। यह यिर्मयाह की 20 सालों की सेवा का संकलन है, जहाँ वह आने वाले न्याय की चेतावनी दे रहा है। इस सब में यहूदा के खिलाफ़ अभियोग का एक हिस्सा यह है कि यहूदा का नेतृत्व वाकई बहुत खराब रहा है।

उनके धर्मत्याग को आंशिक रूप से इस तथ्य से समझाया जा सकता है कि उनके नेताओं, नागरिक नेताओं, राजाओं, राजाओं के अधिकारियों, सैन्य नेताओं ने उन्हें गुमराह किया है। और इसी तरह भविष्यद्वक्ताओं, पुजारियों और शास्त्रियों जैसे आध्यात्मिक नेताओं ने भी उन्हें गुमराह किया है। पाठ्यक्रम के शुरुआती भाग में, हमने ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में यिर्मयाह 22 को देखा, यहूदा की वंशावली में अंतिम राजाओं के साथ यिर्मयाह के संबंध।

याद रखें कि वह भाग यहूदा के बुरे राजाओं पर केंद्रित है। उदाहरण के लिए, यहूदा के राजा यहोयाकीम पर एक विपत्ति घोषित की गई है, जिसने 609 से 597 तक शासन किया। और एक अर्थ में, वह यिर्मयाह का परम विरोधी है।

और अध्याय 22, श्लोक 13 में, धिक्कार है उस पर जो अन्याय और अधर्म से अपना घर बनाता है। इस राजा को मृत्युदंड सुनाया गया है। विडंबना यह है कि जब राजा की मृत्यु होती है, तो यिर्मयाह 22:18 कहता है कि जब वह मर जाएगा तो उसके लिए कोई दुःख की बात नहीं कही जाएगी, न ही उसके लिए शोक भाषण या विलाप कहा जाएगा क्योंकि लोग इससे छुटकारा पाने में प्रसन्न होंगे। उसके।

इसलिए, परमेश्वर राजाओं और नेताओं पर मृत्यु और विनाश की घोषणा कर रहा है। अध्याय 23, पद 1, जिस अनुच्छेद पर हम ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, वह यहूदा के नेताओं पर फैसले की घोषणा से फिर से शुरू होता है। और कहता है, हाय उन चरवाहों पर जो मेरी चराइयों की भेड़-बकरियों को नाश करते और तितर-बितर करते हैं।

इसलिए, यहूदा के नेतृत्व पर फिर से मौत की सजा सुनाई गई है। उन्हें चरवाहों के रूप में वर्णित किया गया है, जो वास्तव में नेतृत्व की एक बहुत प्रभावी छवि है। झुंड की देखभाल के लिए एक चरवाहे को नियुक्त किया गया था।

इसे झुंड की देखभाल करने, उनका भरण-पोषण करने, झुंड के जीवन की रक्षा के लिए जो भी आवश्यक हो वह करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। यहूदा के नेताओं के साथ समस्या यह है कि उन्होंने झुंड की सुरक्षा और भरण-पोषण करने के बजाय उसे खा लिया है। राजा उसी का प्रतिनिधित्व करते थे।

यहोयाकीम जैसे दुष्ट शासक और यहूदा के अंतिम चार राजा, सामान्यतः, उस खराब नेतृत्व को दर्शाते हैं। लेकिन यहूदा में नेतृत्व की समस्या के एक हिस्से में वे भविष्यवक्ता भी शामिल हैं जिन्हें ईश्वर ने अपने वचन की घोषणा करने के लिए भेजा था कि पैगम्बर का कार्य यह है कि ईश्वर अपने कानून के अलावा अपने लोगों से कैसे संवाद करेगा। और यह सन्देश यिर्मयाह में भविष्यद्वक्ताओं के विषय में दिया गया है, जो पद 9 से आरम्भ होता है। और यहोवा कहता है, भविष्यद्वक्ताओं के विषय में मेरा हृदय टूट गया है, और मेरी सब हड्डियाँ कांप उठी हैं।

मैं एक शराबी आदमी की तरह हूँ, एक आदमी की तरह जो वचन और उसके पवित्र शब्दों के कारण शराब के नशे में है। यहाँ नबी बोल रहा है, प्रभु नहीं। और वह कहता है, क्योंकि देश व्यभिचारियों से भरा हुआ है, श्राप के कारण देश शोक मनाता है और जंगल के चरागाह सूख गए हैं।

उनका मार्ग बुरा है, और उनकी शक्ति ठीक नहीं है। नबी और याजक दोनों अधर्मी हैं। यहां तक कि मेरे घर में भी मैंने उनकी बुराई पाई है, यहोवा की यही वाणी है।

पुस्तक की शुरुआत में, यिर्मयाह अध्याय 2 में, भविष्यवक्ता ने यहूदा पर एक बेवफा पत्नी होने का आरोप लगाया था। उन्होंने वेश्यावृत्ति की थी। वे हर पेड़ के नीचे और हर हरी पहाड़ी पर फैल गए थे।

वे अपने पति के रूप में प्रभु के प्रति विश्वासघाती रहे थे। यहाँ फिर से आध्यात्मिक व्यभिचार का विचार आता है। और इसके लिए विशेष रूप से यहूदा के भविष्यवक्ताओं को दोषी ठहराया गया है।

वे ही लोग हैं जिन्होंने लोगों को इस विश्वासघात की ओर अग्रसर किया है। जब परमेश्वर ने न्याय की चेतावनी दी थी तब उन्होंने शांति का वादा करके इन झूठे देवताओं की पूजा को बढ़ावा दिया है। इसके बजाय, उन्होंने लोगों को उनके पापों के बारे में सहज महसूस कराया।

उन्होंने इस व्यभिचार को बढ़ावा दिया था। वे इसके लिए काफी हद तक जिम्मेदार थे। यहोवा कहता है, इस कारण वह याजक और भविष्यद्वक्ताओं का न्याय करेगा।

इस कारण उनका मार्ग अन्धकार में फिसलन भरे मार्ग के समान होगा, जिस में वे ढकेल दिए जाएंगे और गिर पड़ेंगे। क्योंकि उनके दण्ड के वर्ष में मैं उन पर विपत्ति डालूंगा, यहोवा की यही

वाणी है। इसलिये याजक और भविष्यद्वक्ताओं ने उस न्याय की, अर्थात् उस विपत्ति की, जो यहूदा के लोगों पर आने वाली थी, घोषणा नहीं की थी।

और इसलिए, प्रभु उन पर भी विपत्ति लाकर उन्हें उचित दंड देने जा रहा था। भविष्यद्वक्ताओं पर एक और दोषारोपण और वे कितने भ्रष्ट थे, यह हमारे लिए पद 13 से 15 में परिलक्षित होता है। सामरिया के भविष्यद्वक्ताओं में, धर्मत्यागी उत्तरी राज्य के भविष्यद्वक्ताओं के बारे में बात करते हुए, यहूदा के लोगों ने अपनी तुलना इसराइल से की होगी और सोचा, आप जानते हैं, हम उनसे बेहतर हैं।

हम उतने धर्मत्यागी नहीं थे जितने वे थे। परन्तु यहोवा सामरिया के भविष्यद्वक्ताओं के साम्हने कहता है, मैं ने एक घृणित वस्तु देखी। वे बाल या बाल के द्वारा भविष्यद्वक्ताणी करते थे।

उन्होंने मेरी प्रजा इस्राएल को भटका दिया। इसराइल के उत्तरी राज्य के दलबदल और धर्मत्याग की ज़िम्मेदारी का एक बड़ा बोझ उस देश के भविष्यद्वक्ताओं का है। यही बात उन भविष्यद्वक्ताओं के विषय में और भी अधिक सत्य है जो यहूदा में हैं।

प्रभु कहते हैं, "परन्तु यरूशलेम के भविष्यद्वक्ताओं में मैंने एक भयंकर बात देखी है। वे व्यभिचार करते हैं। वे झूठ में चलते हैं।"

वे दुष्टों के हाथ मज़बूत करते हैं ताकि कोई भी अपनी बुराई से न फिरे, और वे सब मेरे लिए सदोम के समान हो गए हैं और उसके निवासी अमोरा के समान हो गए हैं। तुम धर्मत्यागी उत्तरी राज्य से बेहतर नहीं हो। वास्तव में, तुम्हारे भविष्यद्वक्ताओं ने उतना ही या उससे भी ज़्यादा व्यभिचार को बढ़ावा दिया है।

यरूशलेम सदोम और अमोरा की तरह बन गया है, जो पुराने नियम में दुष्टता का अंतिम उदाहरण है, क्योंकि भविष्यद्वक्ताओं की सेवकाई और संदेश ने दक्षिणी राज्य को गुमराह कर दिया है। आयत 16 से 18. अब यहाँ वे विशिष्ट बातें हैं जो लोगों को गुमराह करने का कारण बन रही थीं।

उनके संदेश का सार या विषय-वस्तु क्या थी जो ऐसा होने दे रही थी? आयत 16 से 18 हमें यही बताती है। सेनाओं का यहोवा यों कहता है, उन भविष्यद्वक्ताओं की बातों पर कान मत लगाओ जो तुम्हारे लिए भविष्यद्वक्ताणी करते हैं और तुम्हें व्यर्थ आशाओं से भर देते हैं। वे अपने मन के दर्शन बताते हैं, यहोवा के मुँह से नहीं।

वे लगातार उन लोगों से कहते हैं जो प्रभु के वचन का तिरस्कार करते हैं, तुम्हारा भला होगा। और जो कोई हठपूर्वक अपने मन की बात मानता है, वे कहते हैं, वास्तव में कोई विपत्ति तुम पर नहीं आएगी। ठीक है, तो ऐसी कई बातें हैं जो भविष्यद्वक्ता कर रहे थे और कह रहे थे जो लोगों को गुमराह कर रही थीं।

सबसे पहले, वे अपने स्वयं के शब्द, अपने स्वयं के दृष्टिकोण, अपने स्वयं के सपने बोल रहे थे, जो अक्सर प्राचीन निकट पूर्व में देवताओं द्वारा अपना संदेश संप्रेषित करने का एक तरीका था।

परन्तु उन्हें प्रभु से ये सन्देश नहीं मिले थे। 2 पतरस का कहना है कि एक सच्चा भविष्यवक्ता उन संदेशों को बोलता है जिनकी उत्पत्ति मानव मन या मानव इच्छा में नहीं होती है, लेकिन वे पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर बोले जाते हैं।

यह यहूदा के इन झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में सच नहीं है। वे अपने मन की बात कह रहे थे, वे बस अपने स्वयं के सपने दे रहे थे, और वे लोगों को व्यर्थ आशाओं से भर रहे थे। वे झूठी शांति का संदेश दे रहे थे।

वे ऐसे लोगों को दे रहे थे जिनके पास अभिमानपूर्ण विश्वास था, जो मानते थे कि ईश्वर उनकी रक्षा करेगा, चाहे कुछ भी हो जाए। उन्होंने उन्हें अपने पाप में बने रहने और उस तरह पश्चाताप न करने का बहाना दिया जिस तरह यिर्मयाह उन्हें प्रोत्साहित कर रहा था। और वे यह झूठा संदेश दे रहे थे जिसमें कहा गया था, शांति, शांति, भगवान हमारी देखभाल करेंगे। उन वादों को याद करो जो परमेश्वर ने यरूशलेम से किये हैं।

प्रभु हमारा गढ़ है, और हम विचलित नहीं होंगे। चाहे कुछ भी हो, भगवान हमारी रक्षा के लिए मौजूद हैं। ये वे भविष्यवक्ता हैं जो यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर, यहोवा का मन्दिर कहते थे, और यिर्मयाह ने मन्दिर के उपदेश में खड़े होकर कहा था, इन भ्रामक शब्दों पर भरोसा मत करो।

ये वे भविष्यवक्ता थे जो कह रहे थे, उन प्रतिज्ञाओं को स्मरण रखो जो परमेश्वर ने दाऊद से की थीं। परमेश्वर ने दाऊद के सिंहासन को सदैव के लिए स्थापित करने का वादा किया था। परमेश्वर ने वादा किया था कि वह दाऊद के लिए सदैव पुत्र उत्पन्न करेगा।

देखो, परमेश्वर ने ये वादे किये हैं, और वह हमारी रक्षा करेगा चाहे कुछ भी हो। और इसलिए, यिर्मयाह उनके संदेश को इस तरह से चित्रित करता है, शांति, शांति, जब कोई शांति नहीं है। और सुरक्षा की इस झूठी भावना को पेश करके, वे लोगों से बदलाव के लिए किसी भी वास्तविक प्रेरणा को दूर कर रहे थे।

यिर्मयाह की पुस्तक, शायद किसी भी अन्य पुराने नियम की पुस्तक से अधिक, निश्चित रूप से किसी भी अन्य पुराने नियम के भविष्यवक्ता से अधिक, सच्ची भविष्यवाणी बनाम झूठी भविष्यवाणी पर संघर्ष या संघर्ष को दर्शाने वाली है। यिर्मयाह को शांति के इन झूठे संदेशों और इन झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ बातचीत करनी होगी। यिर्मयाह के जीवन की कहानियों में, यिर्मयाह वास्तव में देश में हनन्याह या शमायाह जैसे लोगों के साथ बातचीत करने जा रहा है, जो निर्वासितों के बीच बेबीलोन में एक पुजारी है।

और इसलिए, जैसे-जैसे हम पुस्तक के माध्यम से अपना काम कर रहे हैं, झूठे भविष्यवक्ताओं और झूठी आशाओं की यह समस्या जो ये भविष्यवक्ता लोगों को दे रहे हैं, लगातार सामने आती रहेगी। अब, पीछे जाकर अध्याय 1 से 25 तक समग्र रूप से देखते हुए, इस्राएल और यहूदा के अभियोग को याद करें। जिन प्रमुख समस्याओं का समाधान किया गया है उनमें से एक इन झूठे भविष्यवक्ताओं और शांति के इन भविष्यवक्ताओं का संदेश है और इसका यहूदा के लोगों पर भ्रष्ट प्रभाव कैसे पड़ा है।

हमारे पास वास्तव में ऐसे भविष्यवक्ता हैं जिनके पास यिर्मयाह की तुलना में वाचा की मौलिक रूप से भिन्न समझ है। यिर्मयाह, सिनैटिक वाचा, मोज़ेक वाचा के आधार पर, विश्वास करता है कि ईश्वर अपने लोगों को आशीर्वाद देता है और आज्ञाकारिता या अवज्ञा के आधार पर उन्हें दंडित करता है या पुरस्कृत करता है। वे परंपराएँ उसके धर्मशास्त्र के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण हैं जितनी कि वे वादे जो परमेश्वर ने दाऊद से किए थे या वे वादे जो परमेश्वर ने सिष्योन के संबंध में किए थे।

उस वाचा की समझ ने यिर्मयाह को यह कहने के लिए प्रेरित किया, याद रखें, परमेश्वर ने दाऊद से एक वादा किया था, लेकिन परमेश्वर ने दाऊद के पुत्रों पर एक दायित्व भी डाला। पुराने नियम के पूरे वाचा के इतिहास में, जब भी परमेश्वर वाचा के वादे करता है, तो उनके साथ हमेशा वाचा की जिम्मेदारियाँ और दायित्व भी जुड़े होते हैं। झूठे भविष्यवक्ताओं की वाचा के बारे में पूरी तरह से अलग समझ थी।

उन्होंने विशेष रूप से वादों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने जिम्मेदारियों को नजरअंदाज कर दिया। और इसलिए आप कल्पना कर सकते हैं कि कैसे वे लोग हैं जो इस अनुमानित समझ में योगदान करते हैं, यह विश्वास कि ईश्वर उनकी रक्षा करेगा चाहे कुछ भी हो, सिष्योन की अनुल्लंघनीयता में यह झूठा विश्वास।

सिष्योन का कभी पतन नहीं होगा। भगवान ने अतीत में इसकी रक्षा की थी। वह भविष्य में भी हमेशा इसकी रक्षा करेंगे।'

तो, झूठे भविष्यवक्ताओं का यह मुद्दा जो शांति के खोखले आश्वासन का वादा करते हैं, यह यिर्मयाह की पुस्तक में लगातार सामने आने वाला है। हम अध्याय 4, श्लोक 9 और 10 पर वापस जाते हैं। उस दिन, परमेश्वर के न्याय के दिन, राजाओं और अधिकारियों दोनों का साहस खत्म हो जाएगा।

पुजारी चकित हो जाएँगे और भविष्यवक्ता चकित हो जाएँगे। तब मैंने कहा, हे प्रभु परमेश्वर, निश्चय ही आपने इस लोगों और यरूशलेम को यह कहकर धोखा दिया है कि तुम्हारा भला होगा, जबकि तलवार ने उनके प्राण ले लिए हैं। ठीक है? इन लोगों को इन भविष्यवक्ताओं ने यह सोचकर धोखा दिया कि उनके लिए सब कुछ ठीक हो जाएगा, और वास्तव में वे तलवार से भस्म होने वाले थे।

न्याय और विनाशकारी विनाश उन पर आने वाला था। और इस अंश में दिलचस्प बात यह है कि यिर्मयाह कहता है कि परमेश्वर ही है जिसने लोगों को यह विश्वास दिलाने के लिए धोखा दिया है। ठीक है, मुझे नहीं लगता कि इससे लोगों की जिम्मेदारी खत्म हो जाती है।

यह इसके लिए ईश्वर को दोष नहीं दे रहा है, बल्कि उन्हें याद दिला रहा है कि ऐसा करके उनके अविश्वास के लिए उन्हें दंडित करने में ईश्वर का हाथ है। ईश्वर ने उन्हें झूठे भविष्यवक्ताओं के संदेश पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करके सच्चे भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए संदेश के बारे में

उनके अविश्वास को दंडित किया है। और हमने इसका उल्लेख दूसरे सत्र और दूसरे खंड में किया है, लेकिन ईश्वर अक्सर अविश्वास को अविश्वास से दंडित करता है।

और भविष्यद्वक्ता, परमेश्वर के संदेशवाहक, इस्राएल में बार-बार आए थे और उन्हें आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी दी थी। लोगों ने नहीं सुना। इसका एक परिणाम यह हुआ कि परमेश्वर ने उनके दिमाग को अंधा कर दिया ताकि वे इन खोखले संदेशों पर विश्वास करें।

अब, आप जानते हैं, जो कुछ चल रहा था, उसके आलोक में कौन विश्वास करेगा कि उनके लिए सब कुछ शांतिपूर्ण होगा? परन्तु उन्होंने विश्वास करके अपने आप को धोखा दिया था, और परमेश्वर ने उन्हें उस विश्वास के अधीन कर दिया था। उसने उनके अविश्वास को और अधिक अविश्वास और आध्यात्मिक अंधेपन से दंडित किया था। 2 थिस्सलुनीकियों 2 आयत 11 में कहा गया है कि भविष्य में जब पापी मनुष्य आएंगे, तो परमेश्वर उनके पास एक भ्रम फैलाने वाला भेज देगा, जो उन्हें झूठ पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करेगा।

दूसरे शब्दों में, ईश्वर उनके अविश्वास को जोड़कर और उन्हें ईसा-विरोधी के झूठ पर विश्वास करवाकर दंडित करने जा रहा है। यिर्मयाह के अनुभव में भी यही चल रहा है। रोमियों अध्याय 1। ईश्वर के बारे में सच्चाई और उसकी शक्ति की वास्तविकता और यह तथ्य कि ईश्वर निर्माता है, यह सृष्टि में ही दिखाई देता है।

उसकी शाश्वत शक्ति और कम से कम ईश्वर के वे गुण सृष्टि में प्रतिबिंबित होते हैं। इस सब के पीछे एक निर्माता है, लेकिन मानवता ने, समय की शुरुआत से ही, उस ज्ञान को अस्वीकार कर दिया है, इसे मोड़ दिया है और विकृत कर दिया है, और इसे मूर्तिपूजा में बदल दिया है। रोमियों 1 कहता है कि परमेश्वर उन पर जो न्याय करता है वह यह है कि वह उन्हें उनके सोचने के झूठे तरीके के हवाले कर देता है।

और अपने आप को बुद्धिमान बताकर मूर्ख बन जाते हैं। यहूदा ने, अपनी मूर्तियों की पूजा करके, सोचा कि उन्हें जीवन जीने का एक बुद्धिमान तरीका मिल गया है जो उस तरीके से बेहतर था जो भगवान ने उनके लिए कानून में बताया था या जो यिर्मयाह जैसे भविष्यद्वक्ताओं द्वारा उन्हें उपदेश दिया गया था उससे बेहतर था। परन्तु वे अपने आप को बुद्धिमान बताकर मूर्ख बन गये थे।

वे इन झूठे भविष्यद्वक्ताओं के संदेश पर विश्वास करने लगे थे। अध्याय 6, श्लोक 13 और 15 यह कहते हैं: उनमें से छोटे से लेकर सबसे बड़े तक, हर कोई अनुचित लाभ का लालची है। और भविष्यद्वक्ता से लेकर याजक तक सब झूठ बोलते हैं।

जब शान्ति नहीं तो शान्ति, शान्ति, कहकर उन्होंने मेरी प्रजा के घाव को हल्का करके चंगा किया है। और यही उनके संदेश का आदर्श वाक्य है। शांति, शांति, सब कुछ अच्छा होने वाला है।'

लेकिन ये भविष्यद्वक्ता ऐसे थे कि वे एक चिकित्सक की तरह थे जो एक ट्यूमर के लिए दो एस्पिरिन लिख रहा था। वे इन लोगों के घावों का हल्के ढंग से इलाज कर रहे थे और परिणामस्वरूप, लोगों को अपने पाप से न फिरने का धार्मिक बहाना दे रहे थे। और इसलिए, पद

15 में कहा गया है, क्या वे घृणित काम करते समय लज्जित थे? नहीं, उन्हें बिल्कुल भी शर्म नहीं आई।

उन्हें शरमाना नहीं आता. इसलिए, वे गिरने वालों में से गिरेंगे। जिस समय मैं उन्हें दण्ड दूँगा, उस समय वे उखाड़ फेंके जाएँगे।

अब, यहाँ यह स्पष्ट है। यह ईश्वर नहीं है जिसने यह अविश्वास थोपा है। वे अपने विश्वास के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं।

उन्होंने भविष्यवक्ताओं के संदेश को स्वीकार कर लिया है। लेकिन हुआ यह है कि शांति की इन झूठी पेशकशों से लोगों को उनके पापों का सामना नहीं करना पड़ा है। उन्हें कोई शर्म महसूस नहीं होती.

भविष्यवक्ताओं ने यह कहकर उनकी जीवनशैली को प्रमाणित किया है कि चाहे कुछ भी हो, ईश्वर आपकी देखभाल करेगा। और वे इस संदेश पर विश्वास करते हैं। और अंततः, वे इससे भ्रमित होने वाले हैं।

अध्याय 8, श्लोक 8 से 12 में यह कहा गया है: तुम कैसे कह सकते हो कि हम बुद्धिमान हैं और परमेश्वर का नियम हमारे साथ है? लेकिन देखो, शास्त्रियों की झूठी कलम ने इसे झूठ बना दिया है। जो लोग परमेश्वर का वचन सिखा रहे थे, उन्होंने इसके संदेश को बदल दिया था। अब, वे वास्तव में पाठ बदल रहे थे या नहीं, यह स्पष्ट नहीं है।

लेकिन वे जो बदल रहे थे वह था उस संदेश का बल, महत्व और महत्व। पाठ में उनकी वाचा की जिम्मेदारियों के साथ-साथ उनकी वाचा की आशीषों पर भी ज़ोर दिया गया था। वे संदेश को इस तरह बदल रहे थे कि केवल वादे ही ध्यान में रखे जा रहे थे।

इसलिए, पद 10 में, मैं उनकी बुद्धि दूसरों को और उनके क्षेत्र विजेताओं को दूँगा। वे न्याय का अनुभव करने जा रहे हैं। वे अपने पाप से नहीं मुड़े हैं।

समस्या भविष्यवक्ताओं की है, फिर से, श्लोक 11, उन्होंने मेरे लोगों के घाव को हल्के से ठीक किया है, यह कहते हुए, शांति, शांति, जब कोई शांति नहीं है। एक चिकित्सक की तरह जो कहता है, अरे, सब कुछ ठीक है, दो एस्पिरिन ले लो। एक सड़ा हुआ आंतरिक रोग है जो उनके जीवन को खा रहा है।

इसका इलाज करना जरूरी है. और यिर्मयाह जैसे भविष्यवक्ताओं का संदेश जो उन्हें उनके पाप के साथ सामना कर रहे थे और कह रहे थे कि आपको शुरुआत में हृदय शल्य चिकित्सा की आवश्यकता है, यह एक दर्दनाक प्रक्रिया है। लेकिन अंततः, यही एकमात्र संदेश है जो उन्हें बचा सकता है।

यिर्मयाह जो कहता है वह यह है कि अंततः, इन लोगों के साथ जो होने वाला है वह यह है कि वे कड़वी निराशा की जगह पर आने वाले हैं क्योंकि शांति के ये झूठे वादे अंततः एक खोखला भ्रम

साबित होने वाले हैं। और इसलिए, हम उन लोगों की निराशा देखते हैं जो अध्याय 8, श्लोक 19 में शांति के इस झूठे आश्वासन के प्रति प्रतिबद्ध हैं, और वे ये बयान दे रहे हैं। क्या यहोवा सियोन में नहीं है? क्या उसका राजा उसमें नहीं है? मेरा मतलब है, झूठे भविष्यवक्ता उन्हें यही बताते रहे हैं।

यहोवा यरूशलेम में है। यहोवा तुम्हारा गढ़ है। आप ठीक हैं।

आपका ख्याल रखा जाएगा। इसका समर्थन करने के लिए उनके पास धर्मग्रंथ की पंक्तियाँ थीं। परन्तु यहोवा यों कहता है, यदि मैं उनके बीच में हूँ, तो उन्होंने अपनी खुदी हुई मूर्तों और परदेशी मूर्तोंके द्वारा मुझे क्यों क्रोध दिलाया है? फसल बीत चुकी है।

ग्रीष्मकाल समाप्त हो गया है। और हम बच नहीं पाये हैं। आप जानते हैं, हम मानते हैं कि भगवान ग्यारहवें घंटे में कदम उठाने वाले थे और हमें बचाएंगे और हमें बचाएंगे।

लेकिन भगवान वहाँ नहीं है। वह हमें नहीं बचा रहा है। क्योंकि मेरी प्रजा की बेटी के घाव से मेरा हृदय घायल हो गया है।

मैं शोक और निराशा करता हूँ। मेरा ख्याल रखा है। उन्हें बहुत देर से एहसास होगा कि उन्हें लाइलाज बीमारी है।

और जब वे यह देखने आते हैं, तो शोक मनाने के लिए केवल एक ही चीज़ बची रह जाती है वह वह आपदा है जिसे भगवान अभी लाने की योजना बना रहे हैं। ठीक है? अध्याय 14. हम श्लोक 13 से 16 तक जाते हैं।

और इन झूठे भविष्यवक्ताओं के संदेश का एक और अनुस्मारक है। और यहाँ प्रभु झूठ बोलने वाले भविष्यवक्ताओं के बारे में क्या कहते हैं। श्लोक 13.

आह, हे प्रभु, देखो, भविष्यवक्ता उन से कहते हैं, तुम तलवार न देखोगे, और न तुम्हें अकाल पड़ेगा। लेकिन मैं तुम्हें इस स्थान पर निश्चित शांति दूँगा। ठीक है? यिर्मयाह उन्हें वाचा के शापों के बारे में चेतावनी दे रहा था।

तलवार और अकाल और महामारी. ये भविष्यवक्ता कह रहे थे कि तुम्हें चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यिर्मयाह एक खतरनाक व्यक्ति है।

वह नहीं जानता कि वह किस बारे में बात कर रहा है। हमारे पास ईश्वर का संदेश है कि ईश्वर हमें शांति देगा। परन्तु प्रभु यही कहते हैं।

भविष्यवक्ता मेरे नाम पर झूठ की भविष्यवाणी कर रहे हैं। मैंने उन्हें नहीं भेजा, न मैंने उन्हें आदेश दिया, न उनसे बात की। वे तुम से झूठ बोलकर भविष्यवाणी कर रहे हैं।

व्यर्थ अटकल. वे उन भविष्यवक्ताओं से भिन्न नहीं हैं जो ज्योतिष और अन्य सभी चीजों का उपयोग कर रहे हैं। वे आपको अपने मन का सच और धोखा नहीं बता रहे हैं।

इसलिए, मेरे नाम से भविष्यवाणी करने वाले भविष्यद्वक्ताओं के बारे में प्रभु यह कहते हैं, हालाँकि मैंने उन्हें नहीं भेजा और जो कहते हैं कि इस देश पर तलवार और अकाल नहीं आएगा, तलवार और अकाल से उन भविष्यद्वक्ताओं को नष्ट कर दिया जाएगा। ठीक है? उन्होंने लोगों को घोषणा की है कि लोगों को तलवार और अकाल और वाचा के अभिशाप का अनुभव नहीं होने वाला है। इसलिए, सजा अपराध के अनुरूप होने जा रही है क्योंकि भगवान यह सुनिश्चित करने जा रहे हैं कि उन भविष्यद्वक्ताओं को वही न्याय का अनुभव हो जो उन्होंने लोगों को बताया है कि नहीं आने वाला है।

ठीक है? तो, यिर्मयाह के बीच यह संघर्ष भगवान के एक सच्चे भविष्यवक्ता के रूप में है जो ईमानदारी से प्रतिनिधित्व करता है कि भगवान और इज़राइल के बीच की वाचा क्या है और यह तथ्य कि यदि वे भगवान द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं, तो उन्हें भगवान की आज्ञाओं और भगवान के तरीकों के अनुसार चलना होगा। इन झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ संघर्ष, जो केवल शांति का खोखला आश्वासन दे रहे हैं, यिर्मयाह की पूरी किताब में अपना प्रभाव दिखाता है। और यिर्मयाह उनके धर्मशास्त्र का वर्णन शेखर के रूप में करने जा रहा है, जो झूठ के लिए हिब्रू शब्द है।

और यह एक आवर्ती शब्द होने जा रहा है। इसलिए, जैसा कि हम अध्याय 23 में आते हैं और हम इस चल रही लड़ाई को समझते हैं जिसमें यिर्मयाह इन झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ उलझा हुआ है, हमें खुद को लोगों के स्थान पर रखना होगा और उनके लिए कुछ हद तक सहानुभूति महसूस करनी होगी क्योंकि सवाल यह है कि एक असली भविष्यवक्ता कैसा दिखता है? हम अंतर कैसे बता सकते हैं? और इसलिए, यदि आप 6वीं शताब्दी, 7वीं शताब्दी में यहूदा में रह रहे हैं, जब परमेश्वर इन न्यायों को लाने के लिए तैयार हो रहा है, और आपके पास, एक तरफ, यिर्मयाह जैसा भविष्यवक्ता है जो आपको न्याय की चेतावनी दे रहा है, दूसरी तरफ, आपके पास हनन्याह जैसे शांति के भविष्यवक्ता हैं जिनसे हम अध्याय 28 में मिलने जा रहे हैं जो आपको वादा करते हैं कि चीजें ठीक हो जाएंगी और दो साल के भीतर यह सब हल हो जाएगा, उन भविष्यवक्ताओं में से आप किस पर विश्वास करने के लिए इच्छुक होंगे? मुझे लगता है कि न्याय की चेतावनियों पर ध्यान देने के बजाय शांति के इस संदेश पर विश्वास करने की प्रवृत्ति होगी। अब, परमेश्वर ने अपने लोगों को सच्चे भविष्यद्वक्ताओं और झूठे भविष्यद्वक्ताओं के बीच अंतर बताने का कोई रास्ता नहीं छोड़ा था।

पैगंबर का पद वास्तव में मूसा के साथ स्थापित और आरंभ किया गया था। और मूसा एक पैगंबर के रूप में प्रतिनिधित्व या प्रोटोटाइप था। और फिर बाद में, शमूएल, कई मायनों में, राजशाही के समय के पहले पैगंबर के रूप में, प्रतिनिधित्व करता था कि एक पैगंबर कैसा होने वाला था।

लेकिन व्यवस्थाविवरण अध्याय 18 में, मूसा के दिनों में प्रभु ने एक वादा किया था, और यहाँ वह क्या कहता है। प्रभु तुम्हारा परमेश्वर तुम्हारे बीच से, तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मेरे जैसा एक नबी खड़ा करेगा। तुम उसी की सुनो।

ठीक है? तो, मूसा के दिनों में, मूसा एक तरह से इस्राएली भविष्यवक्ता का आदर्श था। जब प्रभु ने सिनाई पर्वत पर इस्राएल से बात की थी, और लोगों ने परमेश्वर की शक्ति और गड़गड़ाहट और धुआँ देखा था, तो वे परमेश्वर की उपस्थिति में जाने से डर गए थे। और इसलिए, उन्होंने मूसा से कहा, तुम हमारे प्रतिनिधि के रूप में परमेश्वर के पास जाओ, तुम सुनो कि परमेश्वर क्या कहता है, और तुम वापस आकर हमें वह संदेश बताओ।

और यही एक भविष्यवक्ता की भूमिका और मिशन बन गया। तो, व्यवस्थाविवरण 18:15 क्या कह रहा है, मैं तुम्हारे लिए मूसा जैसा एक भविष्यवक्ता खड़ा करूँगा। यह अंश सिर्फ एक भविष्यवक्ता के बारे में बात नहीं कर रहा है।

सामूहिक रीति से मैं तुम्हारे लिये मूसा के समान एक भविष्यवक्ता खड़ा करूँगा। परमेश्वर कह रहा था कि इस्राएल के पूरे इतिहास में, प्रत्येक पीढ़ी के लिए, वह भविष्यवक्ताओं को खड़ा करेगा जो मूसा का कार्य करेंगे, परमेश्वर के पास जाना, उसका वचन प्राप्त करना, उसका संदेश प्राप्त करना, और वापस आकर लोगों को वह संदेश देना। अब जब हम उस अंश को सुनते हैं, शायद ईसाई के रूप में, मैं मूसा जैसे भविष्यवक्ता को खड़ा करूँगा, हम यीशु को युगांतवादी भविष्यवक्ता के रूप में सोचते हैं।

और प्रेरितों के काम अध्याय 3 उस मार्ग का उपयोग इस प्रकार करेगा। लेकिन वास्तव में, इस परिच्छेद में, यह सामूहिक रूप से सभी भविष्यवक्ताओं के बारे में बात कर रहा है। और मूसा के बाद, यहोशू होगा, फिर शमूएल होगा, एलिव्याह होगा, एलीशा होगा, यशायाह होगा, यिर्मयाह होगा।

सभी भविष्यवक्ता इस वादे की पूर्ति हैं, मैं मूसा जैसा भविष्यवक्ता खड़ा करूँगा। यिर्मयाह की पुकार को याद करें, जहाँ यिर्मयाह कहता है, हे प्रभु, परमेश्वर, मैं तो बच्चा हूँ; मैं बोलना नहीं जानता। पहले ही अध्याय में यिर्मयाह को मूसा जैसा भविष्यवक्ता माना गया है।

इस अंश में, व्यवस्थाविवरण 18 कहता है, श्लोक 18 में मैं अपने शब्द उसके मुँह में डालूँगा। ठीक यही बात परमेश्वर ने अध्याय 1 में यिर्मयाह से कही थी। और इसलिए, यिर्मयाह मूसा की तरह एक भविष्यवक्ता है। वह परमेश्वर के उन सच्चे प्रवक्ताओं में से एक है जिन्हें परमेश्वर लोगों को वह बताने के लिए खड़ा करता है जो उन्हें सुनने की ज़रूरत है।

लेकिन फिर, सवाल यह है कि हम एक सच्चे भविष्यवक्ता को कैसे पहचान सकते हैं? और व्यवस्थाविवरण 18, 15 और उसके बाद, प्रभु ने इस्राएल को एक सच्चे भविष्यवक्ता और एक झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर मापने के लिए कुछ मानक दिए हैं। एक सच्चा भविष्यवक्ता, नंबर एक, एक इस्राएली होना चाहिए। उसे प्रभु के नाम से बोलना चाहिए।

उसे अन्य देवताओं की पूजा की वकालत नहीं करनी चाहिए या लोगों को मूर्तिपूजा की ओर नहीं ले जाना चाहिए। उसे ऐसी भविष्यवाणियाँ जारी करनी होंगी जो शत-प्रतिशत सच होती हों। एक अच्छा बल्लेबाजी औसत पर्याप्त नहीं है।

यदि कोई भविष्यवक्ता एक बार भी गलत है, तो वह सच्चा भविष्यवक्ता नहीं है। यदि कोई भविष्यवक्ता ईश्वर के नाम पर बोलने का दिखावा करता है, लेकिन ईश्वर ने उसे नहीं भेजा है, तो यह एक गंभीर अपराध है। व्यवस्थाविवरण अध्याय 13, यदि कोई भविष्यवक्ता अन्य देवताओं की पूजा की वकालत करता है, तो उस भविष्यवक्ता को मौत की सजा दी जानी चाहिए।

इसलिए, यिर्मयाह के दिनों में, यहूदा में मौजूद कुछ भविष्यवक्ता उस एक परीक्षण से अमान्य हो गए होते। वे यहोवा की उपासना और बाल की उपासना की वकालत कर रहे थे। ऐसा करके उन्होंने साबित कर दिया था कि वे कसौटी पर खरे नहीं उतरे।

लेकिन यिर्मयाह अध्याय 23 में समस्या, और वास्तव में इन झूठे भविष्यवक्ताओं में से कई के साथ समस्या यह है कि वे जरूरी नहीं कि खुद को अन्य देवताओं के पैगंबर के रूप में विज्ञापित करने आए हों। यिर्मयाह के दिनों में लोगों के लिए संघर्ष यह था कि उनके पास कोई डिटेक्टर नहीं था जिससे वे हाथ हिला सकें और कह सकें, ओह, आप एक सच्चे भविष्यवक्ता हैं, आप एक झूठे भविष्यवक्ता हैं। झूठे भविष्यवक्ता, अपने काम में प्रभावी होने के लिए, ऐसी टी-शर्ट नहीं पहनते हैं जो स्वयं को झूठे भविष्यवक्ता के रूप में पहचानती हों।

उनमें से कई इतने चतुर थे कि बाल के नाम पर बात नहीं करते थे, भले ही वह भविष्यवक्ता ही क्यों न हो जो उनके संदेश को प्रेरित कर रहा हो। वे प्रभु के नाम पर उतना ही बोलने जा रहे हैं जितना यिर्मयाह ने किया। जे. एंड्रयू डियरमैन इस संभावना को बढ़ाते हैं।

इनमें से कई झूठे भविष्यवक्ता कभी-कभी सच्चे भविष्यवक्ता रहे होंगे। वे ऐसे लोग हो सकते हैं जिन्होंने अपने मंत्रालय में और अपने जीवनकाल में किसी समय, या शायद कुछ गलत भविष्यवाणियाँ जारी करने से कुछ समय पहले, भगवान ने उनके माध्यम से बात की होगी। हो सकता है कि उनके जीवन और मंत्रालय में किसी समय मूसा की तरह भविष्यवक्ता होने का वैध कार्य रहा हो।

और इसलिए, एक सच्चे भविष्यवक्ता और एक झूठे भविष्यवक्ता के बीच अंतर जानने के लिए यह संघर्ष है। खैर, हमारे पास परीक्षण है। यदि कोई भविष्यवक्ता किसी चीज़ की भविष्यवाणी करता है, तो यह 100% समय घटित होना ही है।

खैर, उस परीक्षण के साथ समस्या यह है कि यिर्मयाह कह रहा है कि यरूशलेम शहर नष्ट होने वाला है, कि निर्वासन 70 वर्षों तक चलने वाला है। झूठे भविष्यवक्ता कह रहे हैं, हम बच जाएंगे, और दो साल के भीतर संकट खत्म हो जाएगा। यहोवा के भवन की वस्तुएं हमें लौटा दी जाएंगी।

100% परीक्षण की समस्या यह है कि ये घटनाएँ अभी तक नहीं हुई हैं। हमने पुस्तक पढ़ी है, और हम जानते हैं कि यिर्मयाह यहाँ सच्चा भविष्यवक्ता था। जो ऐतिहासिक घटनाएँ सामने आती हैं, वे अंततः यिर्मयाह के संदेश को मान्य करने वाली हैं।

अध्याय 39 और अध्याय 52 में दिए गए विवरण पढ़ें। वे हमें दिखाएंगे कि यिर्मयाह बिल्कुल सही था। लोग 70 साल तक निर्वासन में रहे।

यिर्मयाह लक्ष्य पर था। लेकिन वे घटनाएँ अभी तक नहीं हुई हैं। तो फिर, हम अंतर कैसे जान सकते हैं? अध्याय 23 में, इस संदेश पर वापस जाते हुए, प्रभु फिर से कहने जा रहे हैं, इन झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ समस्या यह है कि वे ऐसे संदेश बोल रहे हैं जो मैंने उनके माध्यम से नहीं बोले हैं।

और इन सब बातों को संतुलित करने, तौलने और आंकलन करने में लोगों को जो कठिनाइयाँ हो रही हैं, उसके बावजूद यिर्मयाह एक सच्चा भविष्यवक्ता है। ये विरोधी जो शांति, शांति का उपदेश दे रहे हैं, वे शांति नहीं हैं। और यहाँ इसके अंतिम कारण दिए गए हैं।

पद 16, सेनाओं का यहोवा यों कहता है, जो भविष्यद्वक्ता तुम्हारे लिये व्यर्थ की आशाएं भरते हैं, उनकी बातें मत सुनो। वे प्रभु के मुख से नहीं, बल्कि अपने मन की बातें कहते हैं। जो लोग वचन का तिरस्कार करते हैं, वे निरन्तर कहते रहते हैं, कि तुम्हारा भला ही होगा।

तो, भगवान घोषणा करने जा रहे हैं, अरे, देखो, यह सिर्फ उनका शब्द है। मैंने उन्हें नहीं भेजा है। मैंने उनसे बात नहीं की है।

और यहाँ वह पद है जिस पर मैं ध्यान दिलाना चाहता हूँ और पद 18 में एक सच्चा भविष्यवक्ता क्या होता है इसकी एक बहुत ही शक्तिशाली छवि है। प्रभु कहते हैं, उनमें से कौन प्रभु की सलाह पर खड़ा हुआ है कि वह देख सके और उसका वचन सुन सके? अथवा किसने उसकी बात पर ध्यान देकर सुना है? देखिए, प्रभु की सलाह एक अर्थ में दर्शाती है, हम इसकी तुलना इससे कर सकते हैं। यह स्वर्ग में कैबिनेट की बैठक है जहाँ भगवान महान राजा और अपने स्वर्गदूतों की इस परिषद के अध्यक्ष शासक के रूप में अध्यक्षता कर रहे हैं।

परमेश्वर अपने नियमों और निर्णयों की घोषणा कर रहा है। अब, इज़राइल और यहूदा के आसपास के बुतपरस्त धर्मों में, दैवीय परिषद देवताओं के मिलन स्थल का प्रतिनिधित्व करती थी जहाँ ये कई देवता एक साथ मिलते थे, और वे आदेशों और निर्णयों पर काम करते थे और कभी-कभी उनकी घोषणा करते थे या कम से कम उन्हें लागू करते थे। मानव क्षेत्र में, इज़राइल के आसपास की प्राचीन संस्कृतियाँ, ये बुतपरस्त संस्कृतियाँ, नीचे की मानव सरकार की तरह ऊपर दैवीय सरकार की कल्पना करती थीं या शायद सरकार के विभिन्न रूपों को मान्य करने के तरीके के रूप में इसका इस्तेमाल भी करती थीं।

इज़राइल में, हमारी इस परिषद में एकाधिक देवता नहीं हैं। हमारे पास जो कुछ है वह यह है कि ईश्वर अपने स्वर्गदूतों के दूतों और उन लोगों से मिल रहा है जो उसकी इच्छा को क्रियान्वित और कार्यान्वित करते हैं। और परमेश्वर की सम्मति में, यहोवा अपने नियमों और निर्णयों की घोषणा करता है।

हमारे पास बाइबल के कुछ अंश हैं जो मुझे लगता है कि प्रभु की सलाह के विचार को दर्शाते हैं। उत्पत्ति अध्याय 1 में, जब परमेश्वर मनुष्य को बनाने की तैयारी कर रहा था, तो उसने श्लोक 26 में कहा, आओ हम मनुष्य को अपनी छवि में बनाएँ। और मुझे लगता है कि कभी-कभी, ईसाई होने

के नाते, हम इसे यहाँ पढ़ना चाहते हैं, आइए हम, त्रिदेव के प्रतिबिंब के रूप में, पुराने नियम में उस विचार को स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है।

ज़्यादा संभावना यह है कि ईश्वर अपनी दिव्य परिषद के बीच मानवता के निर्माण के अपने इरादे की घोषणा कर रहा है और वह ईश्वर की छवि में मनुष्यों को बनाने जा रहा है। यशायाह अध्याय 6 में, जब भविष्यवक्ता ने प्रभु को अपने सिंहासन पर बैठे और ऊपर उठे हुए देखा, तो वह महान राजा है। वह संप्रभु है।

और उसके आस-पास के प्राणी उसकी महिमा, उसकी पवित्रता और उसकी शक्ति की घोषणा कर रहे हैं। लेकिन प्रभु अपनी दिव्य परिषद के बीच में कहते हैं, कौन जाएगा और हमारे लिए बोलेगा? और याद रखें कि यशायाह ने जवाब देते हुए कहा, हे प्रभु, मैं यहाँ हूँ। मुझे भेजो, मैं जाकर बोलूँगा।

इसलिए, मुझे लगता है कि हमारे पास कुछ ऐसे अंश हैं जो हमें ठीक वही बताते हैं जिसके बारे में यिर्मयाह अध्याय 23, पद 18 में बात कर रहा है। प्रभु की परिषद वह स्थान है जहाँ परमेश्वर अपने निर्णय और अपने आदेश घोषित कर रहा है। मुझे लगता है कि पुराने नियम का एक और अंश जिसे हम इस चर्चा में ला सकते हैं वह है अय्यूब अध्याय 1। परमेश्वर अपने पुत्रों, स्वर्गदूतों और आध्यात्मिक प्राणियों से मिल रहा है जो उसकी दिव्य परिषद का हिस्सा हैं, और शैतान उस दिव्य परिषद की बैठक में अय्यूब की ईमानदारी पर सवाल उठाने और उसके बारे में सवाल उठाने के लिए आता है।

तो, हम अय्यूब अध्याय 1 में स्वर्गीय परिषद की बैठक को क्रियान्वित होते हुए देखते हैं। तो, यिर्मयाह 23 में श्लोक 18 के लिए इन सबका महत्व यहां दिया गया है। यिर्मयाह कह रहा है, एक सच्चे भविष्यवक्ता की विशेषता यह है, क्योंकि भगवान अपने स्वर्गीय हैं कैबिनेट बैठकें, भगवान एक सच्चे भविष्यवक्ता को उन परिषद बैठकों में आने के लिए आमंत्रित करते हैं ताकि वे अध्यक्षता कर सकें, भगवान ने जो घोषणा की है उसे सुनें और फिर, उनके दूत के रूप में, अन्य मनुष्यों के पास वापस जाएं और जो संदेश निर्धारित किया गया है उसकी घोषणा करें और स्वर्ग में आदेश दिया। मेरा मतलब है, यह काफी दुस्साहसिक बयान है।

यिर्मयाह कह रहा है, और आप इसका कारण जानना चाहते हैं कि मैं आपको सच क्यों बता रहा हूँ जब मैंने आपको घोषणा की थी कि निर्णय आने वाला है और ये लोग जो यहां पर हैं यह क्यों कह रहे हैं कि शांति होगी जबकि शांति नहीं होगी? क्या आप जानते हैं कि आप मुझ पर भरोसा क्यों कर सकते हैं? स्वर्ग में एक बैठक हुई है। मैं वहां था। मैं बैठक में था।

मैंने सुना है कि परमेश्वर क्या निर्धारित कर रहा है और परमेश्वर ने क्या करने का फैसला किया है और मैं परमेश्वर की योजनाओं, परमेश्वर के निर्णयों और परमेश्वर के इरादों की घोषणा करने के लिए उस बैठक के विवरण के साथ आपके पास आया हूँ। ये भविष्यवक्ता जो आपको यह घोषणा कर रहे हैं कि सब कुछ ठीक होने जा रहा है, कि केवल शांति होगी और कोई न्याय नहीं होगा, वे खड़े नहीं हुए। वे वहाँ नहीं थे।

मैं बैठकों में था। वे नहीं थे। और आपको यह बताने के बजाय कि परमेश्वर ने क्या निर्धारित किया है और क्या आदेश दिया है, वे केवल अपने मन की बात कह रहे हैं।

वे इस बारे में सिर्फ अपनी टिप्पणी दे रहे हैं। वे अपनी ही भ्रांतियाँ बता रहे हैं। मैं आपके पास यह कहते हुए आ रहा हूँ कि प्रभु कहते हैं क्योंकि मैं स्वर्गीय परिषद की बैठकों में रहा हूँ और मैं उनका संदेशवाहक हूँ।

अब हमारे पास दिव्य परिषद और उस परिषद में पैगंबर की भूमिका के बारे में एक और अंश है जो मुझे लगता है कि इन सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह 1 किंग्स अध्याय 22 में पाया जाता है, और वहाँ पैगंबर के संदेश के कारण यह मेरी पसंदीदा कहानियों में से एक है। हमारे पास मीकायाह नाम का एक भविष्यवक्ता है, और अहाब और यहूदा के राजा यहोशापात ने एक साथ गठबंधन किया है, और मुद्दा यह है कि यहोशापात को उस गठबंधन में नहीं होना चाहिए था। लेकिन यहोशापात परमेश्वर के सच्चे भविष्यवक्ता से संदेश चाह रहा है।

अहाब के झूठे भविष्यवक्ता आये हैं और उन्होंने आश्वासन दिया है, अरे, चीजें अच्छी होने जा रही हैं। उनमें से एक के पास सींगों वाला हेलमेट भी है, और वह दीवारों में टकराता हुआ घूमता है, यह दिखाते हुए कि अहाब और यहोशापात अपने दुश्मनों के साथ क्या करने जा रहे हैं। और इसलिए, भविष्यवक्ताओं का यह विशाल समूह है जो कह रहा है, अरे देखो, चीजें बहुत अच्छी होने वाली हैं, चीजें अच्छी होने वाली हैं।

यहोशापात ने कहा, क्या यहाँ यहोवा के कोई भविष्यवक्ता नहीं हैं? और अहाब ने कहा, हाँ, एक तो है; उसका नाम मीकायाह है, और मैं उससे नफरत करता हूँ क्योंकि वह मेरे बारे में कभी कुछ अच्छा नहीं कहता। चलो उसे अंदर ले आते हैं। और मीकायाह, जाहिर तौर पर बहुत ही व्यंग्यात्मक तरीके से, अहाब से कहता है, युद्ध में जाओ।

प्रभु तुम्हें आशीर्वाद देंगे और तुम्हारी रक्षा करेंगे। और मुझे लगता है कि अहाब व्यंग्य को समझ सकता है और कहता है, ठीक है, मीकायाह, हमें बताओ कि तुम वास्तव में क्या सोचते हो। और मीकायाह यह कहता है, मैं परमेश्वर की सभा में उपस्थित था।

मैं दिव्य परिषद में था। और मैंने परमेश्वर को, जो उस परिषद की अध्यक्षता करता है, खड़े होकर अपने दूतों से कहते सुना, कौन जाएगा और मेरा दूत बनकर अहाब को धोखा देगा ताकि वह युद्ध में जाए क्योंकि मैंने तय किया है कि मैं उसके धर्मत्याग के लिए उसका न्याय करूँगा और उसे मौत की सज़ा दूँगा। और मीकायाह कहता है, वहाँ एक दिव्य दूत था, वहाँ एक स्वर्गदूत था जिसने कहा, मैं जाऊँगा और मैं इस योजना को क्रियान्वित करूँगा।

और फिर मीकायाह कहता है, यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि आपके वेतन पर काम करने वाले आपके भविष्यवक्ताओं से आने वाले ये झूठे वादे वास्तव में इस देवदूत का भ्रामक संदेश हैं जिसे भगवान ने आपको धोखा देने के लिए भेजा है क्योंकि भगवान ने आपको मौत के घाट उतारने का निश्चय किया है। और हम इस बात से जूझते हैं, अच्छा, क्या भगवान झूठ बोलते हैं या धोखा देते हैं? लेकिन फिर से, हम इस विचार पर वापस जा रहे हैं कि भगवान अविश्वास को अविश्वास से

दंडित करते हैं। जब फिरौन विश्वास करने से इनकार करता है तो भगवान फिरौन के दिल को कठोर कर सकते हैं।

ईश्वर अहाब को विश्वास करने के लिए एक भ्रामक संदेश भेज सकता है क्योंकि अहाब ने बार-बार सत्य सुना है, और उसने इसे अस्वीकार कर दिया है। लेकिन हमारा विचार बहुत स्पष्ट है; मीकायाह कहता है, मैं स्वर्ग पर सभा में था, और जो कुछ परमेश्वर ने ठहराया है, और जो कुछ परमेश्वर ने ठाना है, वह मैं ने सुना, और यहोवा ने ठाना है, कि तुम को मार डालूं। ठीक है? यिर्मयाह अपने बारे में वही दावा कर रहा है जैसा वह प्रचार करता है, और वह श्लोक 22 में झूठे भविष्यवक्ताओं के बारे में कहता है, यदि वे यिर्मयाह की तरह प्रभु की सलाह पर खड़े होते, तो उन्होंने मेरे शब्दों को मेरे लोगों के सामने घोषित कर दिया होता और वे बदल गए होते अपनी बुरी चाल और बुरे कामों से दूर रहो।

उन्होंने उपदेश नहीं दिया... वे प्रभु के वचन का प्रचार नहीं कर रहे हैं। वे लोगों को आने वाले न्याय के बारे में चेतावनी नहीं दे रहे हैं, और इसका कारण यह है कि वे प्रभु की सलाह पर खरे नहीं उतरे। यही मुद्दा है।

यिर्मयाह ईश्वर का एक संदेश बोल रहा है, और इसलिए यह विचार, यह छवि, ईश्वरीय सलाह की यह तस्वीर, और पैगम्बर की ईश्वरीय सलाह तक पहुंच पवित्रशास्त्र की प्रेरणा के बारे में नए नियम की शिक्षा की एक बहुत शक्तिशाली पुष्टि है। 2 तीमुथियुस 3. सभी धर्मग्रंथ ईश्वर-प्रेरित हैं। यह भगवान ने कहा है।

यिर्मयाह अपना वचन नहीं बोल रहा है और याद रखें कि इस पूरी पुस्तक में, यिर्मयाह के शब्द और प्रभु के शब्द समान हैं। आज हमारे पास धार्मिक प्रणालियाँ हैं जो कहती हैं कि बाइबल में ईश्वर का वचन है या बाइबल ईश्वर के वचन की गवाही देती है। यह यिर्मयाह के धर्मशास्त्र के अनुरूप नहीं है जो कहता है कि पैगंबर के शब्द भगवान के शब्द हैं।

क्यों? क्योंकि वह ईश्वरीय परामर्श में रहा है। यह 2 पतरस 1 की पुष्टि है जो कहता है कि भविष्यवक्ताओं ने ऐसे संदेश नहीं बोले जो मानवीय इच्छा से आए या जो स्वयं द्वारा शुरू किए गए थे, बल्कि उन्होंने ईश्वर द्वारा प्रेरित होकर बात की, और यही अंतर है। इसके परिणामस्वरूप, आयत 16 से 22 उन भविष्यवक्ताओं पर जोर देने जा रही है जो आपको शांति का वादा कर रहे हैं।

उनके संदेश का वर्णन करने वाला शब्द है शेकर। यह झूठ है। आयत 33 से 40 तक, हमारे पास शब्दों का खेल है और ये हमेशा अलग दिखते हैं और मुझे दिलचस्पी है कि फिर से इन भविष्यवक्ताओं के संदेश की व्यर्थता के बारे में बात की जा रही है।

श्लोक 33 में कहा गया है, जब इन लोगों में से कोई या भविष्यवक्ता या पुजारी आपसे पूछता है कि प्रभु का बोझ क्या है? इस्राएली भविष्यवक्ताओं द्वारा एक भविष्यवाणी संदेश को अक्सर बोझ, मासा के रूप में संदर्भित किया जाता है। और मुझे लगता है कि यह किसी ऐसी चीज का विचार है जिसे लोगों तक पहुंचाया जाना चाहिए। परन्तु जब लोग पूछते हैं कि प्रभु का बोझ क्या है, तो यिर्मयाह को उनसे, भविष्यवक्ताओं से यही कहना चाहिए।

तुम बोझ हो, और मैं तुम्हें उतार दूंगा, यहोवा की यही वाणी है। और जो भविष्यद्वक्ता, याजक, वा लोगों में से कोई कहे, कि यहोवा का भार, मैं उस मनुष्य और उसके घराने को दण्ड दूंगा। तो बोझ स्वयं पैगम्बर बन गए हैं।

या सेप्टुआजेंट में पढ़ा गया, प्रभु का बोझ क्या है? यिर्मयाह पलटकर लोगों से कहता है, तुम प्रभु का बोझ हो। लेकिन परमेश्वर की ओर से ऐसा वचन होने के बजाय जो उनकी मदद करता, यह परमेश्वर की ओर से ऐसा वचन बन गया है जिसने उन पर बोझ डाला है और अंततः उन्हें सत्य जानने से रोक रहा है। इसके परिणामस्वरूप, इन भविष्यद्वक्ताओं का संदेश ऐसा नहीं है जो उन्हें परमेश्वर तक ले जाए।

यह कुछ ऐसा है जो उन्हें ईश्वर से दूर ले जाता है। अब जब हम पुस्तक के दूसरे भाग में आगे बढ़ते हैं, तो हमारी कुछ परतों में, हमें शेकर के इन भविष्यद्वक्ताओं में से एक के साथ यिर्मयाह की बातचीत का एक वास्तविक जीवंत उदाहरण देखने को मिलेगा। और फिर, यह यिर्मयाह अध्याय 27 से 28 में यिर्मयाह और हनन्याह होने जा रहा है।

और यह संघर्ष होने वाला है क्योंकि यही वह समय है जब यिर्मयाह अंदर आता है, और उसने जूआ पहना हुआ है, और उसके पास यह लकड़ी का जूआ है, और वह इसे इधर-उधर ले जा रहा है, और वह इसके बोझ और इसके वजन के नीचे है, और वह उससे कहता है लोगों, यह दर्शाता है कि परमेश्वर आपको किस प्रकार बाबुल के अधीन और दासत्व में डालने जा रहा है। और हनन्याह नाम का एक भविष्यद्वक्ता जो आकर यहोवा के नाम से बोलता है, कहता है, ऐसी बात नहीं है। वह यिर्मयाह की गर्दन से जूआ उतारता है, उसे जमीन पर पटक देता है, और कहता है, प्रभु हमारे बंधन को तोड़ने जा रहा है, और दो साल के भीतर, प्रभु के मंदिर के सभी सामान जो छीन लिए गए हैं, उन्हें वापस कर दिया जाएगा। हम।

लोगों को फिर से इस संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। हम सच्चे भविष्यद्वक्ता और झूठे भविष्यद्वक्ता के बीच अंतर कैसे जान सकते हैं? यिर्मयाह का संदेश यह है कि यह वचन कि परमेश्वर शांति लाने जा रहा है, एक ऐसा संदेश था जो परमेश्वर की ओर से नहीं आया था। यह एक ऐसा संदेश था जो लोगों का बस एक सपना था।

और यिर्मयाह का संदेश ही वह है जो अधिक संभावित है। यिर्मयाह का संदेश ही वह है जिस पर उन्हें ध्यान देने की आवश्यकता है जब वे अपने जीवन को देखते हैं जब वे देखते हैं कि वे अपनी वाचा की जिम्मेदारियों को पूरा नहीं कर रहे हैं, जब वे देखते हैं कि उनके गले में फंदा कसता जा रहा है; हनन्याह का संदेश संभवतः सत्य कैसे हो सकता है? लेकिन जब हम उन अंशों में जाते हैं, तो हमें उस संघर्ष से निपटना होगा जो यिर्मयाह के श्रोताओं को हो रहा है। हम एक सच्चे भविष्यद्वक्ता और एक झूठे भविष्यद्वक्ता के बीच अंतर कैसे जानते हैं? अध्याय 23 में, यिर्मयाह हमें यह दिखाना चाहता है।

सच्चे और झूठे भविष्यद्वक्ता के बीच अंतर यह है कि सच्चा भविष्यद्वक्ता प्रभु की सलाह पर खड़ा होता है। उसे परमेश्वर से संदेश मिला है। दूसरी ओर, ये भविष्यद्वक्ता जो शांति का वादा कर रहे

हैं, ये हनन्याह जैसे भविष्यद्वक्ता, जो लोगों को वह संदेश बता रहे हैं जो वे सुनना चाहते हैं, वे ऐसे शब्द बोल रहे हैं जो सिर्फ उनके अपने मन के दर्शन हैं।

और लोग अंततः उन वादों की निरर्थकता के बारे में तब जानेंगे जब वे उस विनाश का सामना करेंगे जो परमेश्वर उनके विरुद्ध लाने जा रहा है। जब हम अपनी समकालीन संस्कृति के बारे में सोचते हैं, तो हमें एहसास होता है कि झूठी शिक्षा और झूठी भविष्यवाणी की समस्या आज भी उतनी ही वास्तविक है जितनी तब थी। नया नियम और 2 पतरस और यहूदा के अंश हमें याद दिलाते हैं कि झूठे शिक्षक और झूठे भविष्यवक्ता प्रारंभिक चर्च में एक समस्या थे।

और जो बात मुझे याद आ रही है वह यह है कि मैं यिर्मयाह के सच्चे संदेश और उसके दिनों के भविष्यवक्ताओं के झूठे संदेश की तुलना कर रहा हूँ कि झूठी शिक्षा में अक्सर वही कहा जाता है जो लोकप्रिय है। इसमें वही कहा जाता है जो लोग सुनना चाहते हैं। यह एक ऐसा संदेश प्रचारित करना है जो हमें संघर्ष से दूर रखता है।

हमारी संस्कृति में, यह हमें संकीर्ण सोच और असहिष्णु होने के आरोप से बचाता है। एक मार्ग या संदेश जो लोगों को असहज महसूस कराने में मदद करता है, जबकि कभी-कभी एक भविष्यवक्ता का काम निश्चित रूप से उन्हें सहज महसूस कराना नहीं होता है। यह अक्सर हमारे आस-पास की संस्कृति के प्रचलित विचारों को मान्य करने के बजाय उस संस्कृति का सामना परमेश्वर के वचन की सच्चाई से करने के बजाय होता है।

मुझे आज यकीन हो गया है कि अगर हनन्याह जीवित होता, तो ट्विटर और फेसबुक पर उसके बहुत सारे फॉलोअर्स होते। वह संभवतः एक बहुत लोकप्रिय टेलीविजन उपदेशक हो सकता है जिसने एक मेगाचर्च की अध्यक्षता की थी क्योंकि उसने एक संदेश दिया था जिसे लोग सुनना चाहते थे। और इसलिए कभी-कभी झूठी भविष्यवाणी का खतरा, विशेष रूप से, यह होता है कि इसमें हमारे संदेश को इस तरह से आकार देना शामिल होता है जो लोग जो सुनना चाहते हैं उसकी पुष्टि और पुष्टि करता है।

2 तीमुथियुस अध्याय 4 पद 3 कहता है कि अन्तिम दिनों में ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश सहन नहीं करेंगे। वे केवल ऐसे शिक्षक चाहेंगे जो उनके कानों में गुदगुदी करें या जहाँ उन्हें खुजली हो वहाँ खरोंचें। और वे ऐसे शिक्षकों की तलाश करेंगे जो उनके स्वयं के पापी स्वभाव को प्रमाणित करते हों।

हनन्याह के साथ भी यही हुआ। हनन्याह और झूठे भविष्यद्वक्ता एक ऐसा संदेश प्रचारित कर रहे थे जो लोगों को उनके पापी तरीकों पर चलते रहने की अनुमति देता था, बजाय इसके कि उन्हें बदलने की आवश्यकता के बारे में बताया जाए। और इसलिए मैं कुछ तरीकों के बारे में सोचकर समाप्त करना चाहता हूँ, जिससे शायद हम भी लोगों के लिए अपने संदेश को सहज बना सकें।

आज झूठी भविष्यवाणी समृद्धि धर्मशास्त्र का रूप ले सकती है। जहाँ लोगों को यह याद दिलाने के बजाय कि यीशु का शिष्य बनने का आह्वान दुख और अपना क्रूस उठाने की ओर ले जा सकता है, हम लोगों को बताते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि वे स्वस्थ, सफल और समृद्ध हों। और परमेश्वर पर विश्वास करना या यीशु पर भरोसा करना आपको ऐसा करने में मदद कर सकता है।

मेरा विश्वास करें, जब आप ऐसा करते हैं, तो आपको दर्शक जुटाने में कोई समस्या नहीं होगी। यह एक संदेश है जिसे लोग सुनना चाहते हैं। कभी-कभी यह हमारी भौतिकवादी अमेरिकी संस्कृति को रूढ़िवादी ईसाई धर्म के साथ समन्वयित करने की ओर ले जाता है, और मुझे लगता है कि वास्तव में समृद्धि धर्मशास्त्र यही है।

अपने विश्वास का उपयोग इस धन को प्राप्त करने के तरीके के रूप में करें जिसे हमारी संस्कृति ने भगवान में बदल दिया है। झूठी भविष्यवाणी और जो सहज है उसे कहने का परिणाम उन लोगों पर हो सकता है जो उत्तर आधुनिकतावाद में इतने डूबे हुए हैं कि वे ईसाई धर्म की विशिष्टता और यीशु की शिक्षा को त्याग देते हैं, कि यीशु मसीह ही ईश्वर तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता है। या फिर उन्होंने उत्तर-आधुनिकतावाद के सापेक्षवाद को इस हद तक अपना लिया है कि उनका मानना है कि धर्मग्रंथ की नैतिक निरपेक्षताएं गले लगाने योग्य हैं।

मुझे लगता है कि एक तरह से, यह वही बात है जो यिर्मयाह के दिनों में शांति के भविष्यवक्ता कर रहे थे। हम इस ओर आकर्षित होते हैं जब हम सोचते हैं कि एक बड़ा और सफल चर्च बनाना हमारे लिए इतना महत्वपूर्ण है कि हम सुसमाचार के सकारात्मक पहलुओं, परमेश्वर के प्रेम पर जोर देते हैं, परमेश्वर के क्रोध और सुसमाचार द्वारा हम पर रखी गई माँगों को छोड़कर। आज पवित्र परमेश्वर के बारे में बात करना अलोकप्रिय है जो पाप के लिए प्रायश्चित की माँग करता है।

यह बाल शोषण जैसा लगता है कि परमेश्वर अपने ही बेटे से पाप के प्रायश्चित के रूप में मरने की माँग करेगा। तो, चलिए इस बारे में बात नहीं करते। आइए हम इस बात को बदल दें कि क्रूस और प्रायश्चित क्या है।

शाश्वत दंड का सिद्धांत अपमानजनक है। इसलिए, हम इन ग्रंथों की अपनी समझ को संशोधित करेंगे। एक तरह से, हम वही कर रहे हैं जो हन्ना और मैं और शांति के भविष्यवक्ता उस समय कर रहे थे।

हमें बाइबल को पुनः प्राप्त करना होगा क्योंकि यह संस्कृति के प्रचलित विचारों से मेल नहीं खाती। गर्भपात या समलैंगिकता जैसे नैतिक मुद्दों के बारे में बाइबल क्या कहती है, इस पर वास्तव में विचार करना बहुत विवादास्पद है। और इसलिए, हम इस बारे में बात नहीं करने जा रहे हैं।

आइए गरीबों की मदद करने या संस्कृति को बदलने पर ध्यान केंद्रित करें। इन सभी असुविधाजनक सिद्धांतों और धार्मिक सच्चाइयों के बारे में क्यों परेशान होना चाहिए जो लोगों को विभाजित करते हैं? और इसका उत्तर यह है कि आप जो मानते हैं वह अंततः एकमात्र ऐसी चीज है जो आपको लगातार सही काम करने के लिए प्रेरित करेगी। बाइबल यह नहीं सिखाती है कि नैतिकता सिद्धांत से पहले शुरू होती है।

सिद्धांत नैतिकता को जन्म देता है। और इसलिए, कई मायनों में, झूठी शिक्षा और लोकप्रिय बातें या संस्कृति के विश्वास के अनुरूप बातें कहना आज भी उतना ही प्रलोभन है जितना तब था। और इसलिए, यिर्मयाह के दिनों में लोगों ने जो खतरा और संघर्ष महसूस किया, वह यह था कि हम

परमेश्वर के सच्चे प्रवक्ताओं और झूठे लोगों के बीच अंतर कैसे जान सकते हैं? यिर्मयाह से याद दिलाया गया है कि परमेश्वर के सच्चे वाचा प्रवक्ता वे थे जो लोगों को परमेश्वर के प्रेम और परमेश्वर के आशीर्वाद दोनों की याद दिला रहे थे, लेकिन वे लोग जो लोगों को परमेश्वर के न्याय, परमेश्वर की पवित्रता और उन पर रखी गई जिम्मेदारियों की भी याद दिला रहे थे।

झूठी शिक्षाएँ हमारे पास बहुत ही सूक्ष्म तरीकों से आ सकती हैं। और यह ऐसी चीज़ है जिसके बारे में हमें यिर्मयाह के दिनों के लोगों की तरह ही सावधान रहने की ज़रूरत है। जैसे-जैसे हम यिर्मयाह के जीवन की कहानियों के ज़रिए आगे बढ़ते हैं, हम इस बात के वास्तविक उदाहरण देखेंगे कि यिर्मयाह और झूठे शिक्षकों के बीच कितना संघर्ष था, और उसका कितना असर उसकी सेवकाई पर पड़ा।

और इसके ज़रिए हमें याद दिलाया जाएगा कि यह आज भी हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण है।

यह डॉ. गैरी येट्स द्वारा यिर्मयाह की पुस्तक पर दिए गए निर्देश हैं। यह यिर्मयाह 23, झूठे भविष्यद्वक्ताओं पर सत्र 18 है।